

कुल पृष्ठ संख्या-32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English
(In Figures)
(In Words) _____

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में
शब्दों में _____

नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम - हिन्दी अंग्रेजी
विषय इतिहास
परीक्षा का दिन शुक्रवार
दिनांक 15-03-2019

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

- परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 $\frac{1}{4}$ को 16, 17 $\frac{1}{2}$ को 18, 19 $\frac{3}{4}$ को 20)

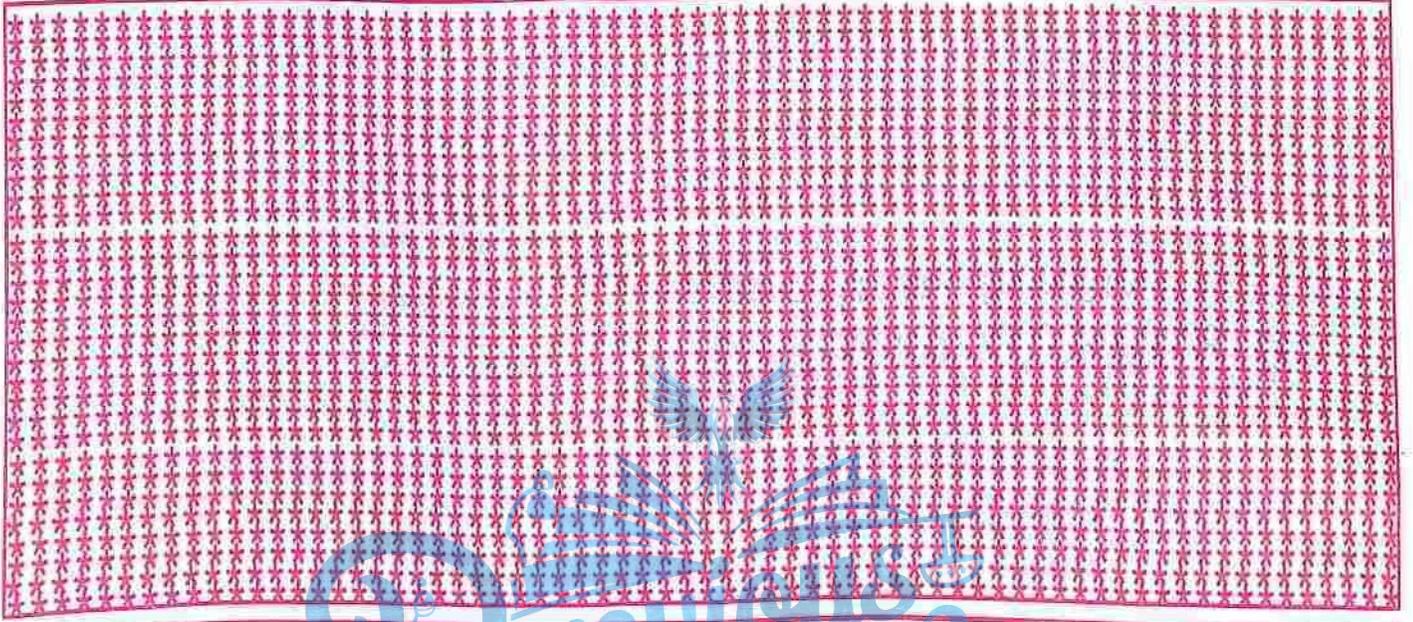
प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम क्रीमवॉश कागज ही उपयोग में लिया गया है। 165/2019



परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न-पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न-पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाइन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
 - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
 - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
 - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्युलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
 - (iv) वस्त्र, स्कैल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस-पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
 - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना साँपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।



प्रश्नक द्वारा
प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर ① ऋग्वेद में 10 मण्डल हैं।

उत्तर ② 'दर्पचरित' के रचयिता श्री बाणभद्र थे।

उत्तर ③ विक्रम संवत् की शुरुआत 57 ई. पू. में हुई।

उत्तर ④ पृथ्वीराज चौहान का राजकवि 'चन्दरनरदाई' था।

उत्तर ⑤ शिवाजी का जन्म 'शिवनेर' के पहाड़ी किले में हुआ।

उत्तर ⑥ खानवा विजय के बाद बाबर ने 'गाजी' की उपाधि धारण की।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर

(10)

अनेक ^{हिन्दू} देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ उल्कीर्ण होने के कारण विजय स्तम्भ को "भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष" कहा जाता है।

उत्तर

(11)

पुराणों की संख्या 18 है एवं सबसे प्राचीन मत्स्य पुराण है।

उत्तर

(12)

रचनाकार	रचनाकार
(i) इंडिका	(घ) मेगस्थनीज
(ii) मृच्छकटिकम्	(ग) शुद्रके
(iii) मंचतत्र	(ख) निष्णुशर्मा
(iv) राजतरंगिणी	(क) कल्हण

उत्तर

(13)

बालगंगाधर तिलक द्वारा प्रकाशित दो समाचार पत्र निम्न प्रकार से हैं -

(i) मराठा (अंग्रेजी समाप्तिका)
(ii) केसरी (मराठी समाप्तिका)

परीक्षक द्वारा
दत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर 16 भारत में 1857 की क्रांति का तात्कालिक कारण - सन 1856 ई. में भारतीय ब्रिटिश सरकार ने सेना को नई एनफिल्ड्स राइफल्स ख़रीदने का निश्चय किया। इन राइफल्स के कारतूस को मुँह से कारना पड़ता था। जनवरी 1857 में भारतीय सैनिकों में यह बात फैल गई कि इन कारतूसों में गऊ एवं सूअर की चर्बी का प्रयोग होता है। गाय भारतीयों के लिए पवित्र थी एवं मुस्लिमों के लिए सूअर निषिद्ध था। अपना धर्म भ्रष्ट होने के कारण सैनिकों ने इनका प्रयोग करने से मना कर दिया एवं विद्रोह करने के लिए उतारू हो गए।

उत्तर 11 वेदांग साहित्य - वेदों का सतत सतत अध्ययन करने के लिए वेदांग साहित्य की रचना की गई। यह इस प्रकार है -

- (i) शिक्षा
- (ii) कल्प
- (iii) व्याकरण
- (iv) निरुक्त
- (v) छंद
- (vi) ज्योतिष



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर 18 बिजोलिया किसान आंदोलन के दो नेता किसे
प्रकार से हैं -

- (i) साधु सिता राम दास
- (ii) विजय सिंह पथिक ।

उत्तर 19 मुगलों द्वारा प्रताप की सेना का पीछान करने के दो
कारण -

- (i) जैसे जून महीने की झुलसाने वाली गर्मी
- (ii) पहाड़ी क्षेत्र में प्रताप के सैनिकों का
ध्यान लगाए हुए बैठे होने का डर ।

उत्तर 20 प्रयाग भीक्ष परिषद - प्रयाग भीक्ष परिषद का
आयोजन 643 ई. में
राजा हर्ष ने किया। इसमें राजा एवं हर्ष के
राजसी मित्रों ने भाग लिया। यह सभा
रेत पर की गई थी जहाँ गंगा और यमुना
मिलती हैं। इस सभा में 5,00,000 से अधिक
लोगों ने भाग लिया। इस सभा में सोने की
मो फूट ऊँची बुद्ध की मूर्ति की स्थापना
की गई एवं राजा हर्ष ने उस पर हीरा-मोती
एवं सोने चाँदी चढ़ाए। व ऐसी ही मूर्ति
पर थोड़ी छोटी राजाना जुलूस में उठायी
जाती थी। राजा हर्ष स्वयं चार उठाता था।



परीक्षक द्वारा
प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

इस सत्र में बौद्ध भिक्षुओं, ब्राह्मणों एवं जैन भिक्षुओं को दान दिया गया एवं बौद्ध से जैन बाले भिक्षुओं को कई दिनों तक दान दिया गया। यह सब 75 दिनों में संपन्न हुआ। इस मोक्ष परिषद का मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन देना था।

उत्तर (श)

कनिष्क बौद्ध धर्म का महान संरक्षक। कनिष्क बौद्ध धर्म का

महान संरक्षक था। कनिष्क के शासनकाल में बौद्ध धर्म अपने चरमोत्कर्ष पर था। इसने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए विदेशों में अपने राजदूत भेजे। इसके शासनकाल में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ। जो कश्मीर के कुण्डलवन में हुई जिसके अध्यक्ष वसुमित्र और उपाध्यक्ष अश्वघोष थे। इसी के शासनकाल में बौद्ध धर्म दो भागों क्षीनयान और महायान में बँट गया। कनिष्क ने बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन देने के लिए महायान शाखा को अपना राजधर्म घोषित किया। इस प्रकार कनिष्क बौद्ध धर्म का महान संरक्षक था।

अतः बौद्ध धर्म का महान संरक्षक होने के कारण कनिष्क को दूसरा अशोक कहा जाता है।



उत्तर (१५) अलाउद्दीन खिलजी के ~~रंगथंभौर~~ आक्रमण के कारण - अलाउद्दीन खिलजी के रंगथंभौर पर आक्रमण के चार कारण निम्न प्रकार से हैं -

(i) अलाउद्दीन खिलजी की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा -

अलाउद्दीन खिलजी सिकंदर की तरह पूरे विश्व को जीतना चाहता था। इसका प्रमाण उसकी "सिकंदर सानी" की उपाधि से मिलता है। इस कारण अलाउद्दीन खिलजी ने रंगथंभौर पर आक्रमण किया।

(ii) सामरिक दृष्टि से रंगथंभौर का महत्त्व -

रंगथंभौर दिल्ली के निकट था इस कारण उसका सामरिक महत्त्व था। एवं अलाउद्दीन राजपूतों को बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करना चाहता था।

(iii) अपने चाचा की हार का बदला लेना -

अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी खिलजी की हार का बदला लेना चाहता था। इस कारण उसने रंगथंभौर पर आक्रमण किया।



प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(iv) राजा हमीर कारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को क्षरण देना — रथसंभार के शासक हमीर द्वारा अलाउद्दीन के विद्रोही मीर मुहम्मद और केदरों को क्षरण देना भी आक्रमण का मुख्य कारण था। इसकी जानकारी नयनचन्द सूरी द्वारा रचित हमीर से मिलती है।

उत्तर 24) लक्सर युद्ध की विजय ने ईस्ट इंडिया कंपनी को आखिर भारतीय शाक्ति बना दिया। क्योंकि

(i) कंपनन बंगाल पर कंपनी का प्रभुत्व स्थापित होना

लक्सर के युद्ध के पश्चात् बंगाल का नियंत्रण अब सि सीधा कंपनी के हाथों में आ गया। अब पूरे बंगाल पर कंपनी आधीपस हो गया एवं और फेसले अंग्रेजों के हाथों में आ गए।

(ii) अवध पर कंपनी का प्रभुत्व स्थापित होना

लक्सर के युद्ध से संपूर्ण अवध पर कंपनी का आधिकार हो गया। एवं गुजाउद्दीन अब कंपनी पर आश्रित हो गया।



(iii) मुगल सम्राट पर आधिपत्य स्थापित होना -

लक्खर के सुध के बाद, मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय कंपनी का पेशान बन गया एवं दिल्ली पर कंपनी का नियंत्रण हो गया।

(iv) संपूर्ण भारत पर प्रभाव - लक्खर के कंपनी का संपूर्ण भारत पर दावा करने लगी एवं अब कंपनी बंगाल से निकलकर दिल्ली पहुंच गई।

जी. ए. रिचर्ड्स
उत्तर: इसलिये कि कंपनी ने कहा कि लक्खर का सुध आधिकारिक नियंत्रण रहा।

उत्तर (23) लक्खर का सुध 1773 की संधि अंग्रेजों और मराठों के मध्य हुई यह अंग्रेजों के लिए अपमानजनक थी क्योंकि -

(i) इस संधि के अनुसार मराठा के सारे प्रदेश लौटा दिये गए।

(ii) अंग्रेजों ने दानि के रूप में 4,00,000 रुपये मराठा को देने पड़े।



(iii) इस संधि के अनुसार अंग्रेजों ने मराठा के पास अपने दो अधिकारी स्वीवर्ट एवं कारमर को रखना स्वीकार किया।

(iv) मराठों के विजित क्षेत्र पुनः मराठों को लौटा दिए गए।

अतः इस लिए "वरिन दारिद्र्य ने कहा कि मैं बड़गाँव की संधि की वार्ते सुनकर शर्म में डूब गया।"

उत्तर 27 राजस्थान में राजनीतिक चेतना के प्रसार में समाचार पत्रों व साहित्य का योगदान - राजस्थान में राजनीतिक प्रसार के लिए समाचार पत्रों व साहित्य का योगदान निम्न प्रकार महत्वपूर्ण है। राजस्थान गजट 1885, राजस्थान केसरी, नवीन राजस्थान, नवज्योति, विप्राप नामक समाचार पत्रों ने अपनी भूमिका अदा की।

साहित्य के क्षेत्र में केसरी सिंह नारद की चेतवनी व चूड़िया। हीरालाल शास्त्री की कविताएँ एवं सूर्यमल्ल मिश्रण की वीर सतसई ने राजस्थान में राजनीतिक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर (15) स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रीय दृष्टिकोण
वर्तमान संदर्भ में भी प्रासंगिक है। क्योंकि-

(i) स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय युवाओं
में आत्मसम्मान और आत्मगौरव की
भावनाओं का संचार किया और कहा
"उठो, जागो और तब तक विश्राम मत करो
जब तक तुम्हें भाजस प्राप्त न हो जाए।"

(ii) स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि देश में
सूखे और बड़े लोगों के लिए मैं उन बालियों
को मुख्य मानता हूँ जो ~~किसी~~ उनके
धान से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

(iii) स्वामी विवेकानन्द पश्चिम के बंधा-
अन्धानुकरण के विरोधी थे। क्योंकि
पश्चिमी सभ्यता लोगों के लिए नरकर
है।

(iv) स्वामी विवेकानन्द भारत की गरीबी
और पतनोत्थापन से दुःखी है जो
वो मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति करना
चाहते हैं।

इस प्रकार विवेकानन्द का राष्ट्रीय दृष्टिकोण
आज भी प्रासंगिक है, उन्होंने स्वतन्त्रता के
सहाराज की लिखा हर कार्य को तीन
अवस्थाओं से गुजरना पड़ता - उपवास,

Sl.No. : 009692

नामांक

Roll No.

2	9	1	3	1	5	9
---	---	---	---	---	---	---

SS-13-Hist.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2019

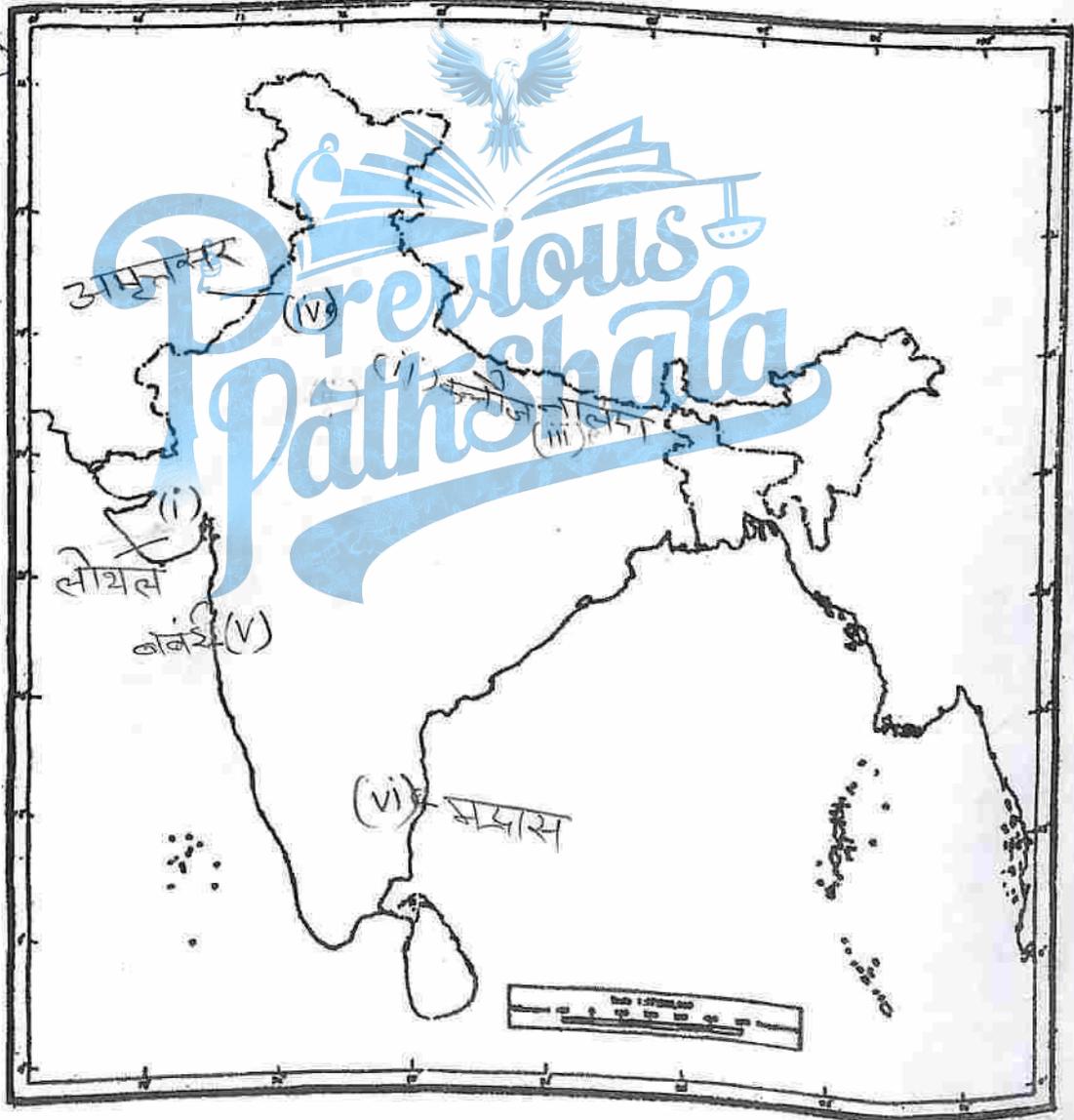
SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2019

HISTORY

इतिहास



उत्तर (30)



SS-13-Hist.

1308

शिक्षक द्वारा
प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

विरोध और स्वीकृति ॥ जो व्यक्ति समय से आगे विचार करता है उसका विरोध अवश्य किया जाता है।

उत्तर 10

सिन्धु सभ्यता में आंतरिक और विदेशी व्यापार दोनों ही उन्नत थे। आंतरिक व्यापार की जानकारी वहाँ से प्राप्त मुद्राओं, मूठों और मूर्तियों, गंडसे, महर्षी पवुडों के कोटे आदि से जानकारी मिलती है कि वहाँ कुम्हारों द्वारा व्यापार किया जाता था। मोहनो जलोद्वे से प्राप्त कारखानों की मूर्तियों से पता चलता है कि वहाँ कारखानों की वस्तुओं की बिक्री होती थी। वहाँ से प्राप्त माँह एव मुद्राओं से वहाँ उन्नत व्यापार की जानकारी मिलती है। सिन्धु सभ्यता से लगभग 2500 मुद्रा मिली है जो वहाँ उन्नत व्यापार की जानकारी देते हैं।

विदेशी व्यापार में सिन्धु सभ्यता के मेसोपोटामिया के साथ संबंध थे। इस सभ्यता के मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संबंध थे। मेसोपोटामिया में मिली सिन्धु सरस्वती की मोहरें इसके प्रमाण हैं। इस प्रकार सिन्धु सभ्यता के आंतरिक और विदेशी व्यापार उन्नत थे।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीमार्थो उत्तर

उत्तर (4) "मिलिन्द पन्थो"। बंगाली"। भाषा में लिखी गई।

उत्तर (5) गंधार कला भारतीय एवं यूनानी कला का मिश्रण है इसलिए इसे ग्रीको बुद्धिष्ट कला जाता है।

उत्तर (6) यदुर्थु बौद्ध संगीति का मूल उद्देश्य बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन एवं बढावा देना था।

उत्तर (14) कुरुयामन ने संस्कृत भाषा को बढावा देने के लिए जूनागढ अभिलेख को संस्कृत में लिखवाया एवं जूनागढ अभिलेख के माध्यम से प्रजावृत्सल कार्य किए। इसके शासनकाल में संस्कृत अपने चरमोत्कर्ष पर था। उसने अपने शासन काल में संस्कृत विक्रान्त विक्रान्तों को संरक्षण दिया गया। एवं कई संस्कृत ग्रन्थों की रचना हुई।



उत्तर (26) सीकर किसान आन्दोलन के कारण - सीकर
के प्रमुख कारण निम्न प्रकार से हैं -

(i) जमींदारों वसूली की आर्थिक शोषण की नीति -

जमींदारों द्वारा किसानों के से कई प्रकार
की लागते वसूल की जाती थी। जिससे
किसानों कई मुश्किलें मुश्किलें उठानी पड़ती
थी जिस कारण से यह आंदोलन
हुआ।

(ii) किसानों की दयनीय स्थिति - किसानों
के साथ
भारपीट की जाती थी उनसे जबरन कर
की वसूली की जाती थी जिससे उनकी
स्थिति दयनीय हो गई।

(iii) करों की आघोषता - किसानों से
कई प्रकार की
वसूली लागते वसूल की जाती थी जिससे
वे कर्ज में डूब गए।

(iv) महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार - महिलाओं
के साथ
दुर्व्यवहार किया जाता था। इसकी लिए
किशोरी देवी की अज्ञातता 1925 में एक



परीक्षक द्वारा प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

बेनाई गई। जिसके महिलाओं के साथ बहो रहे उसी इनको रोका जा सके।

इस प्रकार निम्न परिस्थियों में भी किस्म आमोदन हुआ।

उत्तर 28 अशोक का धर्म - विभिन्न वर्गों एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को एक सूत्र में बाँधने एवं प्रजा के कल्याण के लिए अशोक ने जिन आचारों की सादृशता प्रस्तुत की उसे अभिलेखों में धर्म कहा गया। धर्म के बुनियादी सिद्धांत निम्न प्रकार से हैं -

1) सादृशता - अशोक के धर्म के बुनियादी सिद्धांतों में सादृशता पर दिया। इसमें दो प्रकार के सादृशता का उल्लेख है प्रथम स्वयं की सादृशता एवं कर्तव्य आचारों और विचारों की स्वतंत्रता। इसका उल्लेख अशोक ने अपने 7 और 11वें अभिलेखों में दूसरे लक्ष्य अभिलेख में किया था।

प्रश्न क्र. द्वारा
प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(ii) अहिंसा - अशोक ने अहिंसा पर महत्वपूर्ण बात दिया उसने युद्ध की नीति को त्यागकर दिया। एवं किसी भी प्राणी को सताना छोड़ दिया। इसका उल्लेख इससे एवं 11वें शिलालेख एवं पाचवें स्तम्भ लेख में किया गया है।

(iii) आडम्बहीनता - अशोक ने पुर्वे शिलालेख में आडम्बरो का निरोध किया एवं प्रथम स्तम्भ लेख में धम्म की प्राप्ति के लिए धार्मिक अनुष्ठान, धर्म यात्रा आदि करने को सलाह दी।

(iv) लोक कल्याण - अशोक ने लोक कल्याण के बारे में अपने 13वें शिलालेख में लिखा। उसने, प्रजावत्सल कार्य किए। सराय, कुएँ एवं बावड़ी आदि का निर्माण करवाया।

(v) श्रेष्ठ पवित्र नैतिकता - अशोक ने दूसरे स्तम्भ लेख में इसकी परिभाषा देते हुए कहा है कि "बहुकथाने अपासिनव, दया दाने, सच्चे सौम्यये भावने आधने ये"। अर्थात् सभी के प्रति अच्छा व्यवहार, सभी पर दया करे दान करे एवं सत्य बोलने एवं पवित्रता का अवलम्बन करे, तीसरे स्तम्भ लेख परिभाषा देते हुए कहा कि

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीवार्षी उत्तर

बाह्य आडम्बरो, कर्मकाण्डों आदि का त्याग
करे एवं श्रेष्ठ पावित्र्यनैतिकता का अवलम्बन
करे।

धम्म की क्रियान्वति - अशोक ने धम्म की
क्रियान्वति के लिए
निम्न प्रयास किए।

(i) युद्ध की नीति का त्याग करना - अशोक ने
नीति स्थापित करने के लिए धम्म की
का त्याग कर दिया। युद्ध नीति

(ii) धम्म आयोग बनाना - अशोक ने
के लिए धम्म आयोग बने धम्म की नियुक्ति
से दूल्नीतिवु संबन्ध स्थापित किए।

(iii) उदार दण्ड नीति की स्थापना - अशोक
नीति को उदार बनाया जिसे दण्ड
की क्रियान्वति हो सके।

(iv) धम्म महामाजो की नियुक्ति - अशोक
की क्रियान्वति के लिए धम्म महामाजो
और प्रतिवेदको की नियुक्ति की।



प्रश्न संख्या

परीवार्यो उत्तर

अशोक के जनकल्याणकारी कार्य - अशोक के जनकल्याण कार्य निम्न प्रकार से हैं -

- (i) पितृवत्त शासन का सिद्धांत स्थापित करना अर्थात् प्रजापालक रूप में जनता का कल्याण करना।
- (ii) जनता से प्रत्यक्ष संपर्क करना एवं उनके दुःख करना।
- (iii) समान पण्ड संहिता की स्थापना करना।
- (iv) प्रजा के लिए सराय, कुएँ, बावड़ी आदि निर्माण करवाना।
- (v) आर्थिक विकास पर अत्यधिक ध्यान देना।

धम्म का मूल्यांकन - धम्म के बुनियादी सिद्धांत जिनमें सश्रुता, अहिंसा, लोककल्याण आदि भारतीय संस्कृति में पहले से विद्यमान थे। लेकिन अशोक के बाद अशोक धम्म फली भूत नहीं हो पाया। अशोक के उत्तराधिकारी इसे अक्षुण्ण नहीं रख सके। लेकिन अशोक द्वारा किया गया प्रयास प्रशंसनीय है।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर 29 (अ) बंगाल विभाजन - बंगाल विभाजन के समय ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड कर्जन था। लॉर्ड कर्जन ने साम्राज्यिक दृष्टि से उत्पन्न करने के लिए फूट डालो राज करो की नीति का अनुसरण किया। उसने बंगाल को बड़ा प्रांत बनाते हुए उसके प्रशासनिक सुविधाओं के लिए बंगाल का विभाजन अनिवार्य बनाया जिसके दो भाग पूर्व बंगाल एवं (ii) बंगाल अर्थात् भारतीय वण प्रतिरोध के नावजूद 16 अक्टूबर 1905 को बंगाल का विभाजन कर दिया। इस दिन पूरे बंगाल में शोक दिवस मनाया गया एवं प्रशासनिक कार्यों निकाली गयी। वकुर रवीन्द्रनाथ के आह्वान पर संपूर्ण बंगाल के हिन्दू एवं मुस्लिमों ने स्वदेशी दिवस मनाया। अतः भारतीयों के कड़े प्रतिरोध के कारण इसको 1911 में रद्द कर दिया गया।

(ब) सुभाष चन्द्र बोस - सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 में कटक (उड़ीसा) में हुआ। इनके पिता का नाम जानकीदास एवं माता का नाम प्रभावती थी। इन्होंने अपनी उच्च कलकत्ता से प्राप्त की थी। इन्होंने भारतीय असहयोग आंदोलन में भाग लिया।



नेव गार। यह दो बार इन्दोने 1928 की नेदर रिपोर्ट में जापानिशकु राज्या की भाग का विरोधा किया। यह दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष 1938 ई. हरि पुरा आधिवेशन एव 1935 ई. में त्रिपुरी आधिवेशन में जुने गए। इन्दोने में 1939 फावर्ड ब्लॉक की स्थापना की। एव यह कासनिहारा बोस की के निमंत्रण पर जापान गए एव आजाद हिन्द फौज का गठन किया। इन्दोने जापान में भारतीय अस्थायी सरकार की स्थापना की एव "दिल्ली गवर्नर" एव तुम मझे खून दो में तुम्हे आजादी दूंगा नारे लगाए। इनकी मृत्यु वायुयान दुर्घटना में 18 अगस्त 1945 में जापान में भूयु हो गई।

(स) केबिनेट मिशन - केबिनेट मिशन 1946 ई. में तीनों सर स्टैफर्ड क्रिष्ण, पॉथिकु लॉरेंस, एवी. जेल्जेण्डर तीनों की अध्यक्षता में भारत आया। इसने भारतीय साविधान की रूपरेखा तैयार की एव एव अंतरिम सरकार की स्थापना करने पर बल दिया। गवर्नर की कार्यकारिणी को मिधान परिषद के प्रति उत्तरदायी रखने की रूपरेखा रखी।

समाप्त